21वीं सदी का नाट्य साहित्य विविध विमर्श

संपादक
डॉ. विजय गणेशराव वाघ

ए. आर. पब्लिशिंग कंपनी
1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : +91 9968084132, +91 7982062594
e-mail : arpublishingco11@gmail.com

21VIN SADI KA NATYA SAHITYA : VIVIDH VIMARSH
Edited by Dr. Vijay Ganeshrao Wagh

ISBN : 978-93-88130-87-5
Critisicm

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 450.00

साज-सज्जा : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-55-15

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक व लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

मेरी लाडली पुत्री देवश्री
की मुस्कान को

PRINCIPAL
HINGOLI

12. अभंग गाथा नाटक : नाट्यवस्तु की विवेचना 87
—डॉ. शिवानी कर्नाटक
13. 'अभंग-गाथा' नाटक में भारतीय परिवेश 94
—डॉ. नवनाथ गाड़ेकर
14. 'रति का कंगन' नाटक का मनोवैज्ञानिक पक्ष 101
—प्रा. दशरथ काशीनाथ खेमनर
15. दया प्रकाश सिन्हा के नाटकों में संवेदना के विविध आयाम 108
—वैशाली काशिनाथ गायकवाड
16. 21वीं सदी और हिंदी रेडियो नाटक 114
—डॉ. क्षितिजा
17. सुशील कुमार सिंह के 21वीं सदी के नाट्य-साहित्य में सामाजिक समस्याएँ 119
—प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ वाविस्कर
18. राजनीति के अनेक पक्षों को उजागर करता नाटक : कल दिल्ली की बारी है 126
—डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
19. 21वीं सदी के हिन्दी नाटक साहित्य में मानवीय संवेदना 133
—डॉ. एम.बी. जमादार
20. निःशक्तों की वेदना का प्रतीक : 'वीमा' नाटक 136
—प्रा. डॉ. अशोक तुकाराम जाधव
21. 'वीमा' नाटक में विकलांग की दलित संवेदना 141
—डॉ. गंगा लिंबाजी गायके
22. कुसुम कुमार कृत 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में प्रासंगिकता 145
—श्रीमती लता कुलकर्णी
23. आधुनिक हिन्दी नाटकों में मिथक चित्रण 149
—डॉ. सुजित सिंह परिहार
24. भारतीय रंगमंच, नाटक अवधारणा और थिएटर ऑफ रूट्स 154
—वी. श्रीकांत नंदकुमार
25. 21वीं सदी के प्रमुख हिन्दी बाल नाटकों में नई प्रवृत्तियाँ एवं रंगमंचीय प्रयोग 160
—प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके
26. 'अभंग गाथा' में सामाजिक संवेदना 165
—डॉ. रेविता बलभीम कावळे
लेखक परिचय *172*

18. राजनीति के अनेक पक्षों को उजागर करता नाटक : कल दिल्ली की बारी है

–डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ

डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी जन्म 19 जनवरी 1938 को हुआ था। 1958 में बिहार यूनिवर्सिटी से स्नातक करने के बाद 1961 में राची विवि से एम.ए। किया। 1962 से डोरंडा कॉलेज से अध्यापन का कार्य शुरू किया। इसके बाद राची विवि से ही 1970 में बिहार के नागपुरी और उसका विशिष्ट साहित्य पर शोध कर पीएच. डी. की डिग्री ली। इन्होंने 1985 में डोरंडा कॉलेज से राची विवि के पीजी हिंदी विभाग में योगदान दिए। इसी विभाग से 1996 में सेवानिवृत्त हुए। डॉ. गोस्वामी की कृतियों ने लगभग दर्जन भर उपन्यासों से हिन्दी उपन्यास जगत को समृद्ध किया। उनके प्रमुख उपन्यासों में हैं–जंगलतन्त्रम, चक्रव्यूह, मेरे मरने के बाद, भारत बनाम इंडिया, हस्तक्षेप केंद्र और परिधि, एक टुकड़ा सच, सेतु, राहु केतु, दर्पण झूठ न बोले, कहानी एक नेताजी की व प्रतीक्षा आदि। राची शहर की गाथा धारावाहिक रूप में लिखी।

डॉ. गोस्वामी ने बदलते राची शहर की गाथा धारावाहिक रूप में लिखी जिसका प्रकाशन एक समाचारपत्र में हुआ। वर्ष 2008 में यह राची तब और अब पुस्तक के रूप में सामने आई। इन्होंने अटल जी के नाम धारावाहिक पत्र भी लिखा। यह पुस्तक भी काफी चर्चित रही। इसके अलावा नाटक–'कल दिल्ली की बारी है' व समय भी लिखा। उन्होंने डॉ. कामिल बुल्के स्मृति ग्रंथ और रामचरितमानस के मुंडारी अनुवाद का संपादन भी किया था। वे हिंदी और नागपुरी दोनों भाषाओं में लिखते थे। उन्हें प्रतिष्ठित राधाकृष्ण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

भारत धर्म निरपेक्ष देश है। लेकिन राजनीतिक लोक धर्म के नाम पर जनता को भडकाकर राजनीति कर रहे है। भारतीय रातनीति के अनेक पक्षों को उजागर करता है। डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी का नव प्रकाशित नाटक 'कल दिल्ली की बारी है' इस श्रृंखला की उल्लेखनीय कड़ी है। सच कहें तो आज के बहुरूपिये आदमी के चेहरे की तरह हमारा लोकतन्त्र भी सिर्फ एक मुखौटा है। स्वतंत्रता के पहले जो लोग विदेशी शासकों के पिट्ठू थे, शोषण जिनका व्यवसाय था और अत्याचार जिनका शौक, वे ही शनैः शनैः : देशभक्ति का मुखौटा पहनकर राजनीति में उतर आये। राजनीति का घटिया रुप प्रारंभ से ही दिखाई देता है। 'सेवा' शोषण का पर्याय बन गई। आम आदमी किसी सुनहरे भविष्य की आशा में उन्हें वोट देता रहा और ये सत्तासीन दैत्य सेवा के नाम पर मेवा चखते रहे। वर्तमान राजनीति सत्ता को पर्याय बन गई है। आज राष्ट्र लालफिताशाही, हिटलरशाही और सत्ताशाही की गिरफत में है। लोकहित प्रमुख न होकर स्व हित विशेष रूप से पुजनीय है।

स्वतंत्रता के बाद राजनीति राज घरानों से निकलकर साधारण गलियों तथा सडकों पर आ गई। आम व्यक्ति राजनीति का केन्द्र बन गया। महँगे चुनावों ने सत्ता को आम आदमी की पहुँच से सर्वथा दूर कर दिया। राजनीति सिर्फ जमींदारों, पूँजीपतियों और अन्य धनाढ्य लोगों की बपौती बनकर रह गई। चुनाव प्रचार पर रुपया पानी की तरह बहाया जाने लगा। वोट खरीदने का चलन शुरू हुआ और बेचारे गरीब आदमी का एकमात्र अधिकार भी पाँच पाँच, दस-दस रुपए में लूटा जाने लगा। समर्थ लोगों का हौंसला और बढ़ा तो बूथ पर कब्जा कर बन्दूक के बल पर चुनाव जीते जाने लगे। प्रशासन तन्त्र ने इन अवांछनीय तत्त्वों का साथ दिया और सत्ताधारी पाटी हर पाँचवें साल चुनाव का नाटक करती हुई दृढ़तर होती गई। स्थितियाँ और खराब हुई और अपराधी तत्त्व सीधे राजनीति में घुस आये। मुनाफाखोर, सटोरिये, कालाबाजारी और स्मगलर जो पहले अपने-अपने उम्मीदवारों को जिताकर संसद और विधानसभाओं में भेजते थे, अब स्वयं चुनाव लड़कर सांसद और विधायक बनने लगे। यहाँ तक कि डाकू भी खादी पहनकर नेता बन गये। राजनीति की धुरी चाँदी के सिक्के और बन्दूक की गोली के पहियों में फिट कर दी गई। डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी ने इन सारी स्थितियों को बहुत तीक्ष्णता के साथ 'कल दिल्ली की बारी है' में रेखांकित किया है। राजनीति के भ्रष्ट रूप की चर्चा की गई है।

डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी 'कल दिल्ली की बारी है' का कथानक चुनावी राजनीति के अनेक पहलुओं को उद्घाटित करता है, जिनके टिकट लेने से लेकर विजय के बाद पत्रकारों को दिये गये इन्टरव्यू तक की प्रायः सब स्थितियाँ सम्मिलित हैं। पहले दृश्य में चुनावी वातावरण है। लोकतंत्र में चुनाव का बड़ा महत्व है। हमारी पहचान नेताजी के प्रचारक से होती है जो एक भौंपू पर अपने उम्मीदवार की चुनाव

सभा की उद्घोषणा कर रहा है। चुनाव सभा में दर्शक नहीं पहुंचत नेता जी झल्लाते हैं। नेपथ्य से उभरती हुई आवाज गली गली में शोर है, नेता जी चोर है आग में घी का काम करती है परन्तु व गुस्सा पीकर जनता से सम्पर्क के लिए चौपाल की ओर रवाना हो जाते हैं। यहाँ नाटककार ने नेताजी का जो वेश चित्रित किया हे, वह काफी व्यंजक है। "सफेद धोती , सफेद कुर्ता , काली ऊनी बण्डी और माथे पर सफेद टोपी। पैरों में चप्पल, उम्र साठ के पार बाल सफेद, मूछें काली रंगी हुई। साथ में तीन लठैत और एक पिस्तौलधारी।"[1] ये लठैत और पिस्तौलधारी हमारी प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का असली चेहरा है। इसके बाद शुरू होते हैं रामबाण चुनावी हथकंडे। सबसे पहले नेताजी थाने में जाकर अपने प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवार प्रोफेसर जनार्दन के विरुध्द रिपोर्ट दर्ज कराते हैं कि उसके आदमियों ने नेताजी के कार्यकर्त्ता पर कातिलाना हमला किया। थानेदार घटना की छानबीन करता है और गलत रिपोर्ट लिखाने के आरोप में नेताजी के कार्यकर्त्ता को ही हवालात में बन्द कर देता है। परन्तु नेताजी के हाथ काफी लम्बे हैं। वे उच्च अधिकारियों से मिलकर थानेदार का तुरन्त तबादला करा देते हैं। एक 'वफादार' थानेदार थाने का चार्ज लेता है। इसके बाद तो उम्मीदवार पर हथगोला फेंकना, डाकू बजरसिंह की सहायता से लोगों को आतंकित करना, बूथ पर कब्जा करना आदि सभी पूर्वानुभूत फार्मूले अपनाये जाते हैं और नेताजी चुनाव जीत जाते हैं। खुशियाँ मनायी जाती हैं। डाकू भी अपने अड्डों पर जशन मनाते हैं। इस सन्दर्भ में डाकुओं का गीत उद्धरणीय है अपने सैंया भये कोतवाल, अब डर काहे का। अपना बदल जायेगा हाल, अब घबराना काहे का। अब होंगे हम मालामाल हमें टोकने की किसको मजाल, अपने सैया भये कोतवाल अब डर काहे का।"[2] इस तरह देखा जा सकता है कि राजनीति में डाकू और भ्रष्ट लोग राजनीति में छा गए है। पहले चुनाव सिध्दांतो पर लड़े जाते थे। लेकिन आज चुनाव पैसे के बल पर, आतंक के बल पर लड़े जा रहे है। चुनाव में जो नेता सबसे अधिक धोखाधड़ी, मारपीट, बेईमानी करता है उसी को सबसे अधिक मत मिलते है।

'कल दिल्ली की बारी है' का कथानक में सत्ताभिमुख कार्यशैली व दोगलेपन को अंकित करती है। नाटक का उत्तरार्ध और भी अधिक व्यंजक है। डाकू बज्जरसिंह खादी पहनकर 'ठाकुर वज्रनाथ सिंह' बन जाता है और नेताजी के सहयोग से शासक पार्टी का टिकट हासिल कर विधानसभा के लिए खड़ा हो जाता है। उसके डाकू साथी विरोध में खड़े पाँचों उम्मीदवारों का अपहरण कर अड्डे पर ले जाते हैं। बन्दूक की नाल उनकी ओर तानकर उन्हें चुनाव के मैदान से हट जाने की चेतावनी दी जाती है। वे प्राण बचाने के लिए वचन देते हैं कि वे चुनाव से हट जायेंगे और

बज्जरसिंह उर्फ, ठाकुर वज्रनाथ सिंह एम.एल.ए. बन जाते हैं।

वर्तमान युग के राजनीतिज्ञों की 'कथनी और करनी' में पर्याप्त अंतर आया है। राजनेताओं का राजनीति मे प्रवेश चुनाव के माध्यम से होता है। चुनाव में जो नेता सबसे अधिक धोखाधडी, मारपीट, बेईमानी करता है उसी को सबसे अधिक मत मिलते है। आज का आदमी राजनैतिक बर्बरताओं, क्रूरताओं और दमन के साम्राज्य में दिन काट रहा है। उसका समुचा व्यक्तित्व एक जाने अनजाने आतंक, भय और सुरक्षा की भवनाओं से घिरचुका है। आहोरात्री घटित होती दूर्घटनाए आतंक व उग्रवादी गतिविधियों के तहत होती हत्याए, प्रशासनिक दमन, अत्याचार और क्रुरता ने उसकी आस्था, विश्ध्यास और आशा सदृष्य टोस-विचारधारा को समुल नष्ट कर दिया है। यहि कारण है की वह अपने से प्रथक प्रत्येक दूसरे व्यक्ति को शक व भय के दृष्टि से देखने लगा और जीवन के प्रति गहन आस्था को लगभग पूरी तरह खो चूका है। प्रस्तुत नाटक में जिन हथकण्डों और तिकड़मों का चित्रण हुआ है वे न तो कल्पित हैं और न ही अतिरंजित। डाकू बज्जरसिंह और उसके का यह नारा कि 'विधानसभा हमारी है - कल दिल्ली की बारी है', प्रजातान्त्रिक साथियों उस क्षय का संकेत है, जिसके कीटाणु विधानसभाओं के शरीर में तो फैल ही चुके हैं, जिसके कीटाणु विधानसभा के शरीर में तो फैल ही चुके है, संसद भी उनसे सुरक्षित नहीं रहीं।

डॉ. गोस्वामी ने नाटक में राजनीति के विकृतियों के अनेक रूप मुखरीत हुए है। पाखंड और मुखौटा वृत्ति का चित्रण किया है। नाटककार ने कथानक के अतिरिक्त दृश्यबंधों और संवादों के द्वारा भी उत्कृष्ट व्यंग्य की सृष्टि की है। अवसरवादीता और रंगबदलना आदि राजनेताओं की वृत्ति का पर्दा फाश किया है। पहले अंक के पाँचवें दृश्य में नेताजी जिलाधीश और पुलिस कप्तान के साथ बातचीत करते दिखाये गये हैं। कमरे का दृश्य विधान ध्यान देने योग्य है, "टेबल पर शीशे के तीन सुन्दर गिलास, विदेशी शराब की दो बोतलें, सोडा की तीन बोतलें, बर्फ का जार और एश-ट्रे है। नेताजी के पीछे जो दीवार है उस पर महात्मा गाँधी की एक बड़ी तस्वीर टँगी है।"[3]

प्रथम अंक के अन्त में बज्जरसिंह नेताजी से कहता है, "नेताओं को एक ही जाति होती है उनका धरम भी एक ही होता है। आज कौन नहीं जानता कि नेताओं की जाति के लिए सबसे बड़ी चीज होती है कुस, और उनका धर्म होता है - झूठ बोलना।"[4]

नेता के साथ गांधी का नाम न जुड़े यह संभव नहीं। गांधी के नाम के सहारे ही नेताओं ने अनेक बार चुनाव की वैतरनी पार की है। गाँधीजी की नाक के नीचे

नेताओं और अफसरों का शराब पीना हमारी व्यवस्था की वह बीभत्स तस्वीर है जिसे नकारा भी नहीं जा सकता और सहन भी नहीं किया जा सकता। मतदान केन्द्र पर नियुक्त ग्रामरक्षकों का हुलिया भी गहरा प्रतीकार्थ लिये हुए है। "दोनों पार्श्व पर दो अत्यन्त कमजोर लड़के अपने-अपने हाथ में लाठी लिए खड़े हैं। दोनों ने खाकी वर्दी पहन रखी है जो काफी ढीली-ढाली है। गले के बटन खुले हैं। पैरों में कुछ भी नहीं है। कन्धे पर बिल्ला लगा है, जिस पर लिखा है, ग्रामरक्षक।"[5] अपनी शक्ति और सत्ता सुरक्षित रखने के लिए जनता का ध्यान सदैव दूसरी ओर लगाते है। शासक वर्ग अपनी सत्ता बचाए रखने के लिए नए-नए हथकंडे अपनाता है।

जिस लोकतन्त्र के पहरेदार इतने दुर्बल हों उसकी रक्षा कौन करेगा? श्रवण कुमार गोस्वामी के संवाद सरल और अभिधात्मक है। परन्तु नाटक के कथानक के साथ जुड़कर वे उत्कृष्ट व्यंग्य की सृष्टि करते हैं। कुछ नमूने द्रष्टव्य हैं। किसी भीड का नेतृत्व करनेवाले व्यक्ति को पद का लालच दिखाकर अपने वश में किया जाता है। नेता उसे नया नाम देकर नया पद देते है। चाटुकार यह बात जानते है। डाकू बजरसिंह के ये शब्द सभी नेताओं के चरित्र की अचूक व्याख्या करते हैं। जब बज्जरसिंह मूँछ मुँडाकर और खादी पहनकर नेताजी के सामने जा खड़ा होता है, तो नेताजी उसे सहज नहीं पहचान पाते तब खादी के माहात्म्य का बखान करते हुए बजरसिंह कहता है, "यही तो कमाल है, खादी का यह साली चीज ही ऐसी है कि जब इसे कोई भी पहन लेता है तो उसकी असली पहचान खत्म हो जाती है और उसे पहचानना असम्भव हो जाता है।"[6]

भारत में आज भी अंधविश्वास तथा श्रध्दालु जनों की कमी नहीं है। नेता अपने स्वार्थ के लिए गांधीजी का नाम आगे कर देते है। खादी के जिस आदर्श को गाँधीजी ने स्वावलम्बन का प्रतीक घोषित किया था, उसका इतना अवमूल्यन हमारी नीति-विहीन राजनीति का स्पष्ट परिचायक है। इसी प्रकार जब बज्जरसिंह नेता बनकर चुनाव लड़ने की घोषणा करता है तो उसके साथी इस विचार को ग्रहण नहीं कर पाते। तब बज्जरसिंह उन्हें समझाता है।..." जरा आँखें खोलकर देखने का प्रयास करो तो तुम लोगों को मालूम होगा कि यहाँ हमसे भी बड़े डाकू हैं, हमसे भी बड़े-बड़े अपराधी हैं, हमसे भी बड़े बड़े पापी हैं, मगर उन्हें न कोई डाकू कहता है और न अपराधी समाज की निगाह में ये जनता के सेवक हैं। पुलिस की निगाह में ये लोग देश के नेता हैं। कानून की निगाह में ये लोग इज्जतदार नागरिक माने जाते हैं।"[7] मतदाताओं की मानसिकता का भी नाटककार ने सटीक चित्रण किया है। दरअसल हमारे यहाँ जनतन्त्र की दुर्दशा के लिए सही मायनों में मतदाता ही जिम्मेदार है। यह कैसी विडम्बना है कि उचित-अनुचित हथकण्डों

का प्रयोग कर जीत हासिल करने वाला धूर्त - से धूर्त उम्मीदवार भी जब अपनी विजय को 'जनता की विजय' बताता है तो लोग गद्गद होकर उसका जय-जयकार करने लगते हैं। कोई यह पूछने का साहस नहीं करता कि श्रीमान् जब हमने आपको वोट नहीं दिया, तो आप निर्वाचित किस तरह हो गये? वर्तमान युग में चुनाव जनता के वोटों का पैसों से भी अधिक महत्व होता है। इसलिए गरीब जनता के वोट भावूक होकर मांगने पर व्यंग्य किया है।

अफसरों के चारित्रिक पतन पर भी श्रवण कुमार गोस्वामी ने अच्छा कशाधात किया है। नाटक के एक दृश्य में नेताजी जिलाधीश और पुलिस कप्तान को दावत देते हैं और खिलाने पिलाने के बाद दोनों को चाँदी के जूते भेंट करते हैं। यह केवल उस सौजन्य को कीमत नहीं है, जो ये अफसर उनके इलाके के एक कर्तव्यनिष्ट थानेदार का तबादला कर प्रदर्शित करते हैं। अपितु चुनाव में अनुचित साधनों के उपयोग की मौन अनुमति है। वास्तव में पिछले तीन-चार दशकों में राजनैतिक-सामाजिक परिवेश में जो तीव्र नैतिक अवमूल्यन हुआ है, उसका अन्यतम कारण नेताओं और अफसरों को साँठगाँठ भी है। पारस्परिक सहयोग ने इन दोनों की स्थिति को इतना मजबूत कर दिया है कि बड़े से बड़ा घोटाला करके भी इनके अस्तित्व को आँच नहीं आती। श्रवण कुमार गोस्वामी का व्यंग्य तीव्र सम्प्रेषणीयता से सम्पन्न है। ऊपर की पंक्तियों में जिस चांदी के जूते का जिक्र किया गया है, वह अन्तर्निहित प्रतीकार्थ के द्वारा उत्कोचवृत्ति पर सीधा प्रहार करता है।

एक जगह चुनाव में समर्थ और असमर्थ की टक्कर को नाटककार ने सिंह और बकरी की लड़ाई कहा है, जिसमें बकरी की पराजय नियति नियोजित होती है। प्रमुख के संवाद के माध्यम से नाटककार कहता है, "बकरी तो बेचारी कमजोर होती ही है। उसके पास नाखून भी नहीं होते, जबकि सिंह के पास लम्बे लम्बे धारदार नाखून, तेज दाँत, मजबूत शरीर और दहाड़ने की ताकत होती है। ऊपर से वह जंगल का राजा भी कहा जाता है।"[8] ये पंक्तियाँ केवल उम्मीदवार की साधन-सम्पन्नता की ही व्यंजना नहीं करतीं अपितु चुनाव में प्रयुक्त हिंसक तरीकों और सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का भी संकेत देती हैं। बृहत्तर विधाओं में लिखी व्यंग्य कृतियों में अशोक शुक्ल की 'प्रोफेसर पुराण' श्याम सुन्दर घोष की 'एक उलूक कथा' और बदीउज्जमा की 'एक चूहे की मौत' भी उल्लेख की हकदार हैं। इन कृतियों में सामाजिक राजनैतिक विकृतियों की सुन्दर कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है।

देश में स्वतंत्रता के पश्चात राजनैतिक स्तर पर समय-समय पर उथल-पुथल होती रही है। स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक फलक पर जनतांत्रिक निव रखी गई

थी। जिसमें प्रभुता संपन्न, धर्म निरपेक्ष, शोषण मुक्त, कल्याणकारी शासन की कल्पना की थी। संविधान में मौलिक अधिकार देश की समस्त जनता को देते हुए पारस्परिक सौहार्द युक्त प्रगतशील राष्ट्र के स्वप्न संजोये गए थे। उस अनुसार भारत में गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली का निर्माण किया गया। यह शासन संपूर्ण प्रभूत्व संपन्न है। समाजवादी है, धर्म निरपेक्ष है, लोकतंत्रात्मक है, शासन प्रणाली संसदिय है इस शासन प्रणाली के अंतर्गत पचहत्तर वर्षों में देश का नेतृत्व अनेक बार बदला है लेकिन समस्त सत्ताधिपतियों की मनोवृत्ति वही घोर स्वार्थी रहीं है। उनकी दृष्टि में लोकहित प्रमुख न होकर स्व-हित विशेष रुप सें पूजनीय है। इसलिए राष्ट्र लालफिताशाही, हिटलरशाही और सत्ताशाही के गिरफ्त में आ गया है। नेताओं कि कुर्सी लिप्सा एवं भ्रष्टाचारी मनोवृत्तिने भाई-भतिजा वाद, दमन, आतंक, चाटूकारी संस्कृति एवं विकृत संसद प्रणाली का ही पोषण किया है, इन सब का सिधा प्रभाव आम जनता पर पड़ा है।

समकालीन राजनीति से साक्षात्कार करना नाटककार का एक आवश्यक कर्म बन जाता है, क्योंकि राजनैतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न प्रभाव आम आदमी के जीवन में अनिवार्य रुप से पड़ता है। वह राजनैतिक गतिविधियों को आत्मसात करना हुआ उहें अपना कथ्य बनाता है। साहित्य राजनीतिसे अछुता नहीं है, राजनीतिका केंद्र व्यक्ति है और व्यक्ति साहित्य के मूल में है। डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी 'कल दिल्ली की बारी है' प्रस्तुत नाटक में भारतीय राजनीति के वर्तमान रुप का यथावत चित्रण मिलता है।

सन्दर्भ

1. डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी, 'कल दिल्ली की बारी है', पृ. 17
2. वही, पृ. 79
3. वही, पृ. 43
4. वही, पृ. 58
5. वही, पृ. 43
6. वही, पृ. 92
7. वही, पृ. 100
8. वही, पृ. 50